International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 23-12-2025; Accepted: 22-01-2026; Published: 06-02-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 88-90

विकसित भारत के लिए क्यों जरूरी है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

धन राज
वरिष्ठ शोध अध्येता, हिन्दी विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय, केरल, भारत

सारांश
यह शोध पत्र राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) की विकसित भारत के निर्माण में भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। 1925 में स्थापित यह संगठन भारतीय समाज में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता के संवर्धन में कार्यरत है। शोध में संघ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वैचारिक आधार, कार्यप्रणाली और बहुआयामी योगदान का परीक्षण किया गया है। संघ का शैक्षणिक योगदान, सेवा कार्य, सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तीकरण और युवा विकास विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। संघ की दैनिक शाखाएं लाखों स्वयंसेवकों को चरित्र निर्माण और राष्ट्र सेवा के लिए प्रशिक्षित करती हैं। विकसित भारत 2047 के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सामाजिक संगठनों की सक्रिय भूमिका अनिवार्य है। संघ का विकेंद्रीकृत संगठन, जमीनी उपस्थिति, निःस्वार्थ सेवा की परंपरा और सांस्कृतिक–राष्ट्रवादी दृष्टिकोण इसे राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण बनाता है। शोध निष्कर्ष बताता है कि संघ जैसे व्यापक सामाजिक संगठन विकसित भारत के निर्माण में सरकारी प्रयासों के पूरक के रूप में आवश्यक भूमिका निभा सकते हैं।

मूल शब्दः राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, राष्ट्र निर्माण, चरित्र निर्माण

प्रस्तावना
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) की स्थापना 1925 में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा नागपुर में की गई थी। यह विश्व का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन माना जाता है, जिसका उद्देश्य भारतीय समाज में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और सामाजिक समरसता की भावना का संचार करना है। विकसित भारत के निर्माण की दिशा में संघ की भूमिका को लेकर विभिन्न दृष्टिकोण मौजूद हैं। यह शोध पत्र संघ की भूमिका, कार्यप्रणाली, योगदान और विकसित भारत के संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और वैचारिक आधार
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना उस समय हुई जब भारत में सामाजिक विघटन, सांप्रदायिक तनाव और राष्ट्रीय चेतना की कमी के संकेत दिखाई दे रहे थे (Anderson & Damle, 1987)। हेडगेवार जी ने महसूस किया कि भारत की स्वतंत्रता और सामाजिक उत्थान के लिए एक मजबूत संगठन की आवश्यकता है जो राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण कर सके। इसी संदर्भ में पूर्व केन्द्रीय मंत्री और कांग्रेस सांसद करण सिंह कहते है कि "I would like the Rashtriya Swayamsevak Sangh to continue focusing on nation&building, especially character-building, in the next 100 years, because only through character-building can a society progress." (The Hindu, 2025)
संघ का वैचारिक आधार "हिंदुत्व" की अवधारणा पर टिका है, जिसे वीर सावरकर ने एक सांस्कृतिक और सभ्यतागत पहचान के रूप में परिभाषित किया था। यह केवल धार्मिक पहचान नहीं बल्कि एक व्यापक सांस्कृतिक–राष्ट्रीय पहचान है जो भारत की प्राचीन सभ्यता, संस्कृति और मूल्यों से जुड़ी है। संघ के द्वितीय सरसंघचालक गुरु गोलवलकर ने अपनी पुस्तक "बंच ऑफ थॉट्स" (Bunch of Thoughts) में इस विचारधारा को विस्तार से प्रस्तुत किया।

संघ की कार्यप्रणाली और संगठनात्मक ढांचा
संघ की कार्यप्रणाली शाखाओं पर आधारित है जहां प्रतिदिन स्वयंसेवक एकत्रित होकर शारीरिक प्रशिक्षण, बौद्धिक चर्चा और चरित्र निर्माण की गतिविधियों में भाग लेते हैं। यह अद्वितीय प्रणाली संगठन की शक्ति का आधार है। देश भर में लगभग 60,000 से अधिक शाखाएं प्रतिदिन लगती हैं जहां लाखों स्वयंसेवक भाग लेते हैं।
संघ का संगठनात्मक ढांचा पूरी तरह से लोकतांत्रिक और विकेंद्रीकृत है। प्रत्येक इकाई को स्वायत्तता प्राप्त है, लेकिन सभी एक केंद्रीय विचारधारा से जुड़े हैं। यह संरचना इसे लचीला और प्रभावी बनाती है। संघ का कोई राजनीतिक एजेंडा नहीं है और यह किसी भी राजनीतिक दल से सीधे जुड़ा नहीं है, हालांकि इसके कई स्वयंसेवक विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय हैं (Jaffrelot, 1996)।

सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता में योगदान
संघ का सबसे महत्वपूर्ण योगदान सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता की दिशा में रहा है। जाति व्यवस्था के कारण भारतीय समाज में जो विभाजन मौजूद थे, उन्हें दूर करने में संघ ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शाखाओं में सभी जाति, वर्ग और आर्थिक पृष्ठभूमि के लोग एक साथ बैठते हैं, खाते हैं और कार्य करते हैं।
संघ के "समरस भारत" अभियान ने समाज में व्याप्त छुआछूत और जातिगत भेदभाव को समाप्त करने की दिशा में कार्य किया है। विभिन्न जातियों और समुदायों के बीच सद्भाव बढ़ाने के लिए संघ नियमित रूप से सामूहिक भोज, मिलन समारोह और सामाजिक कार्यक्रम आयोजित करता है। इससे समाज में एकता और भाईचारे की भावना मजबूत होती है।

शैक्षणिक और बौद्धिक योगदान
संघ से संबद्ध विद्या भारती संस्था देश का सबसे बड़ा गैर–सरकारी शैक्षणिक नेटवर्क है जो लगभग 13,000 से अधिक स्कूल चलाता है। इन विद्यालयों में 35 लाख से अधिक बच्चे शिक्षा प्राप्त करते हैं (Benei, 2008)। ये विद्यालय आधुनिक शिक्षा के साथ–साथ भारतीय संस्कृति, मूल्यों और परंपराओं की शिक्षा भी देते हैं।
संघ की शैक्षणिक दृष्टि भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित करने और आधुनिक विज्ञान के साथ इसे एकीकृत करने पर केंद्रित है। इससे बच्चों में सांस्कृतिक जड़ों के प्रति गर्व और आधुनिक ज्ञान दोनों का विकास होता है। यह संतुलित दृष्टिकोण विकसित भारत के निर्माण के लिए आवश्यक है।

सेवा और आपदा प्रबंधन

संघ की सेवा भावना इसकी पहचान है। प्राकृतिक आपदाओं, महामारियों और आपात स्थितियों में संघ के स्वयंसेवक सबसे पहले राहत कार्य में जुट जाते हैं। चाहे वह भूकंप हो, बाढ़ हो, सुनामी हो या कोरोना महामारी, संघ के स्वयंसेवक निःस्वार्थ भाव से सेवा करते हैं। 2013 की उत्तराखंड त्रासदी, 2018 की केरल बाढ़ और 2020–21 की कोविड–19 महामारी में संघ की सेवा कार्य अनुकरणीय रहे हैं।

संघ से संबद्ध सेवा भारती संस्था देश के दुर्गम और आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य और विकास कार्य करती है। यह संस्था लगभग 1.5 लाख से अधिक सेवा परियोजनाएं चला रही है जो समाज के वंचित वर्गों तक पहुंचती हैं। इन परियोजनाओं में छात्रावास, स्वास्थ्य केंद्र, व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र और महिला सशक्तीकरण कार्यक्रम शामिल हैं।

पर्यावरण संरक्षण और ग्रामीण विकास

संघ पर्यावरण संरक्षण को भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग मानता है। वृक्षारोपण, जल संरक्षण, नदी पुनरुद्धार और स्वच्छता अभियानों में संघ के स्वयंसेवक सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। देवभूमि द्वारका और नर्मदा सेवा यात्रा जैसी परियोजनाएं नदियों के संरक्षण और पुनरुद्धार के लिए कार्यरत हैं।

ग्रामीण विकास के क्षेत्र में भी संघ का योगदान उल्लेखनीय है। दीनदयाल शोध संस्थान जैसी संस्थाएं गांवों में आत्मनिर्भरता, कुटीर उद्योग और परंपरागत कौशल के संरक्षण पर कार्य कर रही हैं। इन प्रयासों से ग्रामीण समुदायों का सशक्तीकरण हो रहा है और शहरों की ओर पलायन में कमी आ रही है।

महिला सशक्तीकरण

राष्ट्र सेविका समिति, जो संघ की महिला शाखा है, महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिए कार्यरत है। यह संस्था महिलाओं को शारीरिक प्रशिक्षण, नेतृत्व विकास, व्यावसायिक कौशल और सामाजिक जागरूकता प्रदान करती है। देश भर में हजारों महिला शाखाएं संचालित होती हैं जहां लाखों महिलाएं नियमित रूप से भाग लेती हैं।

संघ से जुड़ी विभिन्न संस्थाएं महिलाओं के लिए स्वरोजगार, कौशल विकास और उद्यमिता कार्यक्रम चलाती हैं। इससे महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक सशक्तीकरण दोनों को बल मिलता है। परंपरागत भारतीय मूल्यों के साथ आधुनिक सशक्तीकरण का यह संतुलन संघ की विशिष्टता है।

युवा विकास और चरित्र निर्माण

भारत की 65 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु की है। इस युवा शक्ति को सही दिशा देना विकसित भारत के लिए अनिवार्य है। संघ का मुख्य फोकस युवाओं के चरित्र निर्माण, नेतृत्व विकास और राष्ट्रीय चेतना जागृत करने पर है। शाखाओं में दी जाने वाली शिक्षा, शारीरिक प्रशिक्षण और बौद्धिक विमर्श से युवाओं में अनुशासन, संयम और समर्पण की भावना विकसित होती है।

संघ के विभिन्न आयाम जैसे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (ABVP), भारतीय मजदूर संघ (BMS), भारतीय किसान संघ (BKS) आदि विभिन्न वर्गों को संगठित करते हैं और उनके हितों की रक्षा करते हैं। ये संगठन राष्ट्रीय हित को सर्वोपरि रखते हुए अपने–अपने क्षेत्रों में कार्य करते हैं।

आर्थिक राष्ट्रवाद और स्वदेशी का संवर्धन

संघ हमेशा से आर्थिक आत्मनिर्भरता और स्वदेशी के पक्षधर के रूप में जाना जाता है। स्वदेशी जागरण मंच जैसी संस्थाएं भारतीय उद्योगों, कुटीर उद्योगों और स्थानीय उत्पादों के संवर्धन के लिए कार्य करती हैं। यह दृष्टिकोण आज के वैश्वीकृत युग में भी प्रासंगिक है जहां आत्मनिर्भरता राष्ट्रीय सुरक्षा का अभिन्न अंग है।

संघ की आर्थिक विचारधारा एकात्म मानववाद पर आधारित है जिसे पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने प्रतिपादित किया था। यह विचारधारा पूंजीवाद और समाजवाद दोनों के विकल्प के रूप में भारतीय दर्शन पर आधारित आर्थिक मॉडल प्रस्तुत करती है। इसमें व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और प्रकृति सभी के संतुलित विकास पर बल दिया जाता है।

सांस्कृतिक पुनर्जागरण

भारत की सांस्कृतिक विरासत विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध है। लेकिन औपनिवेशिक काल में इस विरासत को हेय दृष्टि से देखा गया और पश्चिमी संस्कृति को श्रेष्ठ माना गया। संघ ने भारतीय संस्कृति के पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। योग, आयुर्वेद, संस्कृत भाषा, भारतीय संगीत, कला और शास्त्रीय परंपराओं के संरक्षण और संवर्धन में संघ की भूमिका सराहनीय है।

आज पूरा विश्व योग और आयुर्वेद को अपना रहा है, यह भारतीय संस्कृति की सार्वभौमिक प्रासंगिकता को दर्शाता है। संघ ने इन परंपराओं को जीवित रखा और उन्हें नई पीढ़ी तक पहुंचाया। विकसित भारत के लिए यह सांस्कृतिक आत्मविश्वास अत्यंत आवश्यक है (McKean, 1996)।

राष्ट्रीय सुरक्षा और सीमा प्रबंधन

राष्ट्रीय सुरक्षा संघ की प्राथमिकता रही है। सीमावर्ती क्षेत्रों में संघ की शाखाएं राष्ट्रीय चेतना जागृत करने और स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाने का कार्य करती हैं। सीमा क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को राष्ट्रीय मुख्यधारा से जोड़ना और उनका विकास सुनिश्चित करना राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।

संघ की विचारधारा में राष्ट्र सर्वोपरि है और राष्ट्रीय हितों की रक्षा प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। यह दृष्टिकोण राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए आवश्यक है। विशेष रूप से जम्मू–कश्मीर, पूर्वोत्तर और अन्य संवेदनशील क्षेत्रों में संघ का कार्य राष्ट्रीय एकीकरण में सहायक रहा है।

विकसित भारत 2047 और संघ की भूमिका

भारत सरकार ने 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य रखा है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए केवल सरकारी प्रयास पर्याप्त नहीं हैं। समाज के सभी वर्गों को सक्रिय भूमिका निभानी होगी। संघ जैसे व्यापक सामाजिक संगठन की भूमिका इस दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

विकसित भारत केवल आर्थिक समृद्धि का पर्याय नहीं है बल्कि यह सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक गौरव, पर्यावरण संतुलन, शैक्षिक उत्कृष्टता और नैतिक मूल्यों पर आधारित समाज का निर्माण है। संघ इन सभी क्षेत्रों में सक्रिय है और इसका योगदान बहुआयामी है। संघ के लाखों समर्पित स्वयंसेवक देश के कोने–कोने में राष्ट्र निर्माण के कार्य में लगे हैं।

संघ की कार्यप्रणाली में निःस्वार्थ सेवा, अनुशासन, संगठनात्मक क्षमता और दीर्घकालिक दृष्टि जैसे गुण हैं जो विकसित भारत के निर्माण के लिए आवश्यक हैं। संघ का विकेंद्रीकृत संगठन और जमीनी स्तर पर उपस्थिति इसे विशिष्ट बनाती है।

आलोचनाओं का समाधान

संघ को कुछ आलोचनाओं का भी सामना करना पड़ा है। कुछ आलोचक इसे सांप्रदायिक संगठन बताते हैं जबकि कुछ इसकी विचारधारा को संकीर्ण मानते हैं। हालांकि, संघ की वास्तविक कार्यप्रणाली और इसके सामाजिक कार्यों को देखें तो यह स्पष्ट

होता है कि संघ का उद्देश्य समावेशी राष्ट्र निर्माण है। संघ के शाखाओं में सभी जाति, वर्ग और पृष्ठभूमि के लोग भाग लेते हैं। यह सत्य है कि संघ की विचारधारा को लेकर विभिन्न मत हैं, लेकिन एक लोकतांत्रिक समाज में विचारों की विविधता स्वाभाविक है। महत्वपूर्ण यह है कि संघ के कार्यकर्ता संवैधानिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध हैं और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में विश्वास रखते हैं। संघ ने हमेशा संवैधानिक तरीकों से कार्य किया है और कानून का सम्मान किया है।

निष्कर्ष

भारतीय स्वयंसेवक संघ पिछले लगभग 100 वर्षों से भारतीय समाज में विभिन्न स्तरों पर कार्य कर रहा है। इसकी भूमिका बहुआयामी है– सामाजिक समरसता, शिक्षा, स्वास्थ्य, आपदा प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और राष्ट्रीय एकता। विकसित भारत के निर्माण के लिए इन सभी क्षेत्रों में सामूहिक प्रयास आवश्यक हैं।

संघ की शक्ति इसकी संगठनात्मक क्षमता, समर्पित स्वयंसेवकों की विशाल संख्या और निःस्वार्थ सेवा की भावना में निहित है। यह संगठन सरकार या राजनीतिक दलों से स्वतंत्र होकर समाज के हर वर्ग तक पहुंचता है और राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देता है। विकसित भारत का निर्माण केवल सरकारी योजनाओं से नहीं होगा बल्कि समाज के सक्रिय सहयोग और जन–भागीदारी से होगा।

संघ जैसे संगठन जो जमीनी स्तर पर काम करते हैं, समाज को संगठित करते हैं, मूल्य–आधारित शिक्षा देते हैं और सेवा भाव जागृत करते हैं, वे विकसित भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। संघ का व्यापक सामाजिक नेटवर्क, इसकी सांस्कृतिक जड़ें और राष्ट्रवादी दृष्टिकोण इसे विकसित भारत के संदर्भ में प्रासंगिक बनाता है।

हालांकि, यह भी आवश्यक है कि संघ समय के साथ विकसित हो, समावेशिता को और मजबूत करे और सभी वर्गों को समान रूप से साथ लेकर चले। विकसित भारत का सपना तभी साकार होगा जब समाज के सभी वर्ग, संगठन और संस्थाएं मिलकर राष्ट्र निर्माण में योगदान देंगी। इस दृष्टि से संघ की भूमिका न केवल महत्वपूर्ण है बल्कि अपरिहार्य भी है।

संदर्भ सूची

1. Anderson W, Damle SD. The Brotherhood in Saffron: The Rashtriya Swayamsevak Sangh and Hindu Revivalism. Boulder: Westview Press, 1987.
2. RSS Should Continue to Focus on Nation-Building for Next 100 Years, Says Former Congress MP Karan Singh." The Hindu, 30 Sept. 2025, https://www.thehindu.com/news/national/rss-should-continue-to-focus-on-nation-building-for-next-100-years-says-former-congress-mp-karan-singh/article70113536.ece
3. Benei V. Schooling Passions: Nation, History, and Language in Contemporary Western India. Stanford: Stanford University Press, 2008.
4. Jaffrelot C. The Hindu Nationalist Movement and Indian Politics: 1925 to the 1990s. London: Hurst & Company, 1996.
5. McKean L. Divine Enterprise: Gurus and the Hindu Nationalist Movement. Chicago: University of Chicago Press, 1996.